




FEMALE WRITERS IN HINDI TRAVELOGUE LITERATURE

| | | |
|--|--|----------------------|
|  Connecting Research and Researchers https://orcid.org/0009-0005-8775-2751 | DR. VASANT PUNJAJI GADE Associate Professor and Head of Department Nagnath Arts Commerce & Science College, Aundha District Hingoli, Maharashtra vasantgade2011@gmail.com | |
| Received: 17.08.2024 | Reviewed :20.08.2024 | Accepted: 22.08.2024 |

ABSTRACT

Female writers have made significant contributions to Hindi travelogue literature, offering unique perspectives shaped by their personal experiences, cultural contexts, and challenges. Their travel narratives explore themes of identity, freedom, self-discovery, and the nuanced roles of women in different societies. These writers enrich the genre with reflective and poetic prose, often blending travel observations with social commentary. These works are not merely descriptive journeys but also delve into emotional landscapes, capturing the inner transformations triggered by external voyages. Through their travelogues, these authors have expanded the scope of Hindi literature, making it more inclusive and introspective.

KEY WORDS: cultural contexts, of identity, freedom, self-discovery

हिन्दी के प्रवासी महिला कहानीकार

प्रवासी हिन्दी साहित्य लेखन की यह परम्परा दीर्घकाल तक यथावत बनी रहें ताकि आने वाले समय की नई भारतीय पीढ़ी को प्रवास से संदर्भित सारी जानकारी सहज ही मिलती रहे। प्रवासी लेखक अपने लेखन की परम्परा को इसी प्रकार निभाते रहे और भारतवंशी होने के गर्व को सदा अपनी लेखनी से उद्बलित करते रहे. ऐसा कर प्रवासी साहित्यकार स्वयं को सहज परिभाषित कर सकेंगे।

साहित्य की अभिव्यक्ति विदेशी भाषा में की जाए तो ऐसा साहित्य संवेदनशील नहीं होगा। विदेशों में बैठे हिन्दी साहित्यकार ने अपने लेखन का माध्यम हिंदी चुना, क्योंकि इसके माध्यम से वह अपने पीछे छूट चुके देश के आंतरिक संबंध को बनाए रखना चाहते हैं। प्रवासी लेखक प्रवास के दुख-दर्द की संवेदनाओं के साथ अपने देश में सस्कारों को जोड़कर उनमें व्याप्त विषमताओं को कागज पर उतार देता है और यह संवेदनाएँ सहज ही सबसे जुड़ सबकी संवेदनाएँ ये बन जाती हैं। "फीजी में माता-पिता

अपने बच्चों को हिंदी इसलिए नहीं पढ़ाते कि इसमें रोजगार की संभावनाएँ हैं,

कुछ वर्षों बाद प्रवासियों का साहित्य के क्षेत्र में दखल बढ़ गया। अगले पड़ाव के साहित्यकार और प्रवासी वे लोग थे जो स्वेच्छा से प्रवास कर रहे थे। जिनकी आर्थिक स्थिति अच्छी थी और जो बंधुआ मजदूर के संताप और प्रलाप को छोड़ मानसिक रूप से स्वयं को स्थापित करने की मनोदशा बना चुके थे। पहले गए प्रवासियों से इनकी सोच, कार्य और व्यवहार भिन्न थे। इन्होंने अपनी अभिव्यक्ति के लिए एवं उसे सुरक्षित रखने के लिए रचनाकर्म का सहारा लिया। वहाँ की परिस्थितियों को देखकर मानसिक स्तर पर चेतन और सजग इन लोगों ने अपने संताप को अपनी साहित्यिक रचनाओं में अभिव्यक्त किया। इनमें से बहुत से लोग भारत रहते हुए अपनी साहित्यिक गतिविधियों के लिए प्रसिद्ध थे और जो केवल स्वान्तः सुखाय लिखते थे वे प्रवास की समस्याओं और संवेदनाओं से सहज ही जुड़ गये और अपनी रचनाओं द्वारा प्रवासी साहित्य के पुरोधा बनकर उमरे।

वर्तमान में रचे जा रहे साहित्य में प्रवासी लेखक अपने देश के साथ-साथ संपूर्ण विश्व में अपने जुड़ाव को अभिव्यक्त कर रहे हैं। भारतीय प्रवासी लेखक भावनात्मक रूप से भारत से जुड़े हुए हैं यही कारण है कि उनके साहित्य में प्रवासी भूमि के साथ ही अपने देश के प्रति प्रेम की भावना भी देखने को मिलती है। वस्तुतः आज के प्रवासी साहित्य की संपूर्ण दृष्टि भारत के रंग से रंगी हुई है। इनके साहित्य में आधुनिक दौड़ और मानसिक द्वंद्व का यथार्थ रूप देखने को मिलता है। यही विभेदन दृष्टि प्रवासियों के साहित्य को नवीनता - प्रदान करती है।

भारतवंशी हिंदी लेखक स्वयं को भारतीय संस्कृति को मजबूत आधार देते हैं।" प्रवासी साहित्य की रचना के कारण चाहे जो भी रहे हो, उनमें चित्रित परिस्थितियाँ चाहे जैसी भी रही हो, किंतु आज का सत्य यह है कि प्रवासी हिन्दी साहित्य, भारतीय हिन्दी साहित्य का अभिन्न अंग बन गया है। प्रवास की समस्याओं और संघर्षों की वास्तविकताओं से भरा यह साहित्य हमें मानव के जुझारु होने की सीख देने के साथ ही सदैव प्रयत्नशील होने की सीख देता है। "हिन्दी के प्रवासी साहित्य ने अपना एक संसार रचा. जो चाहे छोटा ही था, परंतु उसने एक अलग साहित्य संसार की रचना की जो पूरे विश्व में निरंतर फैलता गया और हिन्दी के प्रवासी साहित्य का एक बिम्ब निर्मित हुआ । पहले वह मॉरिशस तक सीमित था, अब उसका परिदृश्य वैश्विक बन गया। उसकी सरचना में कई शक्तियाँ काम करती रही। विश्व के कई देशों में विश्व हिन्दी सम्मेलन हुए। भारत के हिन्दी लेखकों एवं प्रवासी हिन्दी लेखकों का भारत में सम्मान होने लगा। देश की साहित्यिक अकादमियों ने प्रवासी हिंदी साहित्य पर गोष्ठियाँ की, प्रवासी भारतीय दिवस तथा डास्पोरा आरम्भ किया। प्रवासी लेखकों की कृतियाँ भारत में छपती रही, उन पर चर्चाएँ हुई और हिन्दी विश्व में प्रवासी हिन्दी साहित्य की प्रतिष्ठा बढी हिन्दी को मुख्यधारा में उचित स्थान देने की माँगे उठने लगी। हिन्दी साहित्य का उपर्युक्त प्रयास श्लाघ्य हैं। "

आज स्थिति यह है कि मॉरिशस, अमेरिका एवं इंग्लैंड तीन ऐसे प्रमुख देश हैं जहाँ प्रवासी भारतीयों की संख्या सार्वधिक है और सम्भवत इस कारण इन देशों में हिन्दी लेखकों की संख्या भी सबसे अधिक है। इन प्रवासी लेखकों में अनेक ऐसे लेखक हैं जिनकी भारत ही नहीं अपितु विश्व हिंदी मंच पर प्रतिष्ठा है और जिनके पाठकों की संख्या किसी भी लोकप्रिय हिन्दी लेखक से कम नहीं हैं।

हिन्दी का प्रवासी साहित्य अब एक आन्दोलन नहीं, बल्कि एक वास्तविकता है और हिन्दी साहित्य की मुख्यधारा का ही अंग है, जैसा दलित एवं आदिवासी साहित्य यह इक्कीसवीं सदी का नया साहित्य विमर्श हैं हिन्दी में प्रवासी साहित्य का आगमन यद्यपि बीसवीं सदी में ही आरम्भ हो गया था, किन्तु भूमण्डलीकरण के प्रवासी विमर्श को नई शक्ति, नई ऊर्जा और नई सार्थकता प्रदान की है हिन्दी के इस प्रवासी साहित्य के 'प्रवासी' कहलाने और पहचान पर कोई भी आपत्ति निरर्थक है, क्योंकि यह नामकरण अब इतना प्रचलित एवं स्वीकृत हो चुका है कि इसे बदलना अब संभव नहीं है और भारतेतर देशों में रहकर कोई भारतीय हिन्दी में रचना करेगा तो वह देश विदेश में सर्वत्र हिन्दी का प्रवासी साहित्य ही कहलायगा परन्तु अनेक जन इस संकल्प से परिचित नहीं हैं। प्रवासी किसे कहते हैं? प्रवासी साहित्य प्रवासी भारतीय साहित्य अथवा प्रवासी हिन्दी साहित्य किसे कहते हैं? इसका स्वरूप कैसे होता है? इसकी सृजनात्मकता किन में होती है? हम किन्हें प्रवासी साहित्यकार कह सकते हैं? अनेक प्रश्न उभरकर आते हैं? विजन सोचते रहे विचार-विमर्श जारी रहा। पत्र पत्रिकाएँ निकलती रही और अनेक उत्तर सामने आते गए प्रवासी साहित्य जो पहले उपलब्ध था उससे आज का प्रवासी साहित्य एकदम अलग हैं। प्रवासी साहित्य की कहानियों में भारतीय और विदेशी समाज का अपना अपन महत्व है। भारतीय अपनी मातृभूमि व रिश्तों से अलग होकर विदेशी परिवेश में खुद को एडजस्ट नहीं कर पाते। यह स्वाभाविक ही है क्योंकि भारतीय और विदेशी सभ्यता व संस्कृति तथा जीवन शैली में अत्यधिक अन्तर है।

प्रवासी कथा साहित्य में अपने अपनाएं हुए देश के परिवेश, संघर्ष, रिश्तों और उपलब्धियों पर जाने माने प्रवासी कथाकारों ने अपने लेखन द्वारा एक भिन्न समाज से परिचित करवाया है। भारतीय प्रवासी कथाकार के लिए यह आसान नहीं होता कि वह अपनाएं हुए देश की संस्कृति, सभ्यता और रीति-रिवाजों से पूरी तरह जुड़ पाएं। उनकी जड़े अपनी मातृभूमि संस्कारों एवं भाषा से जुड़ी होती हैं। प्रवासी भारतीय साहित्यकारों की इस प्रवृत्ति पर प्रकाश डालते हुए अनीता कपूर अपने लेख में कहती हैं कि- "प्रवासी कथा साहित्यकारों में ऐसे बहुत से नाम हैं, जिनकी रचनाओं को पढ़कर आप बखूबी अनुमान लगा लेंगे कि आज भी विदेशों में रहते हुए भी वे दुनिया को भारतीय चष्मे से देखते हैं इसीलिए उनका लेखन नयेपन के बावजूद भी पाठक के दिल के करीब होता है और मन को दू जाता है।"

उषा प्रियंवदा प्रवासी साहित्य की सर्वश्रेष्ठ कथाकार हैं इन्होंने भारतीय और प्रवासी जीवन की सूक्ष्म परतों को अपनी कहानियों में खोला है प्रवासी कहानियों में भारतीय और विदेशी संस्कारों का टकराव तथा परिवेश व संस्कृति के दवदव पर इनका एक कोई दूसरा कहानी संग्रह महत्वपूर्ण है। इसमें संकलित 'सागर पार का संगीत कहानी स्त्री की अकेलेपन से मुक्ति पाने की चेष्टा है। "चादनी में बर्फ" पर कहानी में दो संस्कारों को दिखाया है जिनमें विदेशी स्त्री अपने प्रेमी के साथ निस्संकोच कहीं भी जाती है परन्तु भारतीय स्त्री अपने प्रेमी का निमंत्रण अस्वीकार कर देती है। 'पिघलती हुई बर्फ' में लेखिका ने यह दिखाया है कि जब दो प्रेमी युगल के बीच कोई तीसरा आता है तो ईश्वर भयानक रूप धारण कर लेती है जो उस आने वाले की हत्या करके ही समाप्त होती है। इस प्रकार यह संग्रह नारी के टूटने और बिखरने की प्रस्तुति है जो बदलते हुए परिवेश में नए बन रहे संबंधों का परिणाम है। उषा जी ने विविध भावों को मार्मिकता और सहजता के साथ अपनी कहानियों में प्रस्तुत किया है और कहीं भी कृत्रिमता नहीं आने दी है। ये कहानियाँ भारतीय और विदेशी परिवेश में टकराहट उत्पन्न करती हुई लिखी गई हैं। उन्होंने स्वीकार किया है कृकृ 'इस संग्रह में

प्रायः वे सभी कहानियाँ हैं जो भारतीय मन और विदेशी परिवेश का द्वन्द्व सामने रखती हैं। नए परिवेश और संस्कारों के बनने बिगड़ने को कथा रूप देती हैं, प्रामाणिक और निर्भीक अनुभूतियों को पहली बार साहस और तटस्थता से स्वीकृति देती है।

अमेरिका में रह रही सुशम बेदी आज भी भारतीय संस्कृति और उन रीति रिवाजों को भुला नहीं पायी है, जिनमें आज भी स्त्री हर रस्मों रिवाज को निभाने में पूरा सहयोग करती है। इनकी कहानी 'अवसान में नायक शंकर अपने दोस्त का अंतिम संस्कार हिन्दु रीति से करना चाहता है, परन्तु उसकी अमेरिकन पत्नी हेलन चर्च में ही सारी औपचारिकताएं पूरी करना चाहती हैं। इस कहानी में स्त्री विदेशी मूल की है, तो उसका एक अलग ही रूप दर्शाया गया है जो भारतीय स्त्री से कहीं भी मेल नहीं खाता।

उषा देवी विजय कोल्हटकर ने अपनी कहानियों में अमेरिकी जीवन-शैली और संस्कारों के समानान्तर भारतीय जीवन पद्धति और जिन मूल्यों को रखा है, वह सराहनीय है 'सरोगेट मदर' कहानी में अमेरिकी समाज की नई पीढ़ी जिन विकारों में जी रही है उस पर इन्होंने प्रकाश डाला है। अध्ययन काल में हॉस्टल रहने आई ऊशा से उसकी अमेरिकी मित्र पूछती हैं कि क्या तुम डॉस करती हो, क्या सिगरेट, शराब तथा ड्रग्स का सेवन करती हो? तो उषा इन सबके नकारानात्मक जवाब देती है जिस पर वे सहानुभूति व्यक्त करती है हुई कहती है कि तब तो तुम्हें बहुत सी समस्याओं से जूझना पड़ेगा। इस कहानी का केन्द्र सिंडी नामक वैश्या है जो पहले विज्ञापन का व्यवसाय करती थी अधिक धन के स्वार्थ में वह वैश्यावृत्ति पर उतर आई पर जब इससे भी उसे अधिक धन नममाज के इन विकारों की कटु आलोचना करते हुए वीरेन्द्र मोहन कहते हैं-"अमेरिकी समाज में मातृत्व की भावना और वात्सल्य का तथा माता-पिता के प्रति सन्तान का दृष्टिकोण बेमतलब है यहां मातृत्व को बाजार बना दिया गया है। यहाँ अमेरिकी व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के नरक के द्वारा को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। प्रवासी

हिन्दी कहानी पर विश्लेषण करते हुए यह बात सामने आती है कि जितनी भी प्रवासी साहित्य में कहानियाँ लिखी गई उनके केन्द्र में अधिकतर स्त्री जीवन है स्त्री जीवन को केन्द्र में रखकर इन्होंने स्त्री-विमर्श पर बात तो की परन्तु इनका विमर्श भारतीय स्त्री विमर्श से भिन्न है। डॉ० प्रीत अरोड़ा भारतीय और प्रवासी कहानियों में चित्रित स्त्री विमर्श में अन्तर स्पष्ट करती हुई कहती है, "आज भारत में लिखी जा रही अधिकांश कहानी स्त्री-विमर्श के नाम पर दैहिक विमर्श भी करती नजर आती हैं। स्त्री-पुरुष संबंधों की कहानियाँ वहाँ भी हैं मगर उनमें उतना खुलापन नहीं है, जितना भारतीय हिन्दी कहानियों में नजर आता है। उपा वर्मा की कहानी 'सलमा भारतीय नारी सलमा के मानसिक द्वंद्व और निर्णय लेने की क्षमता पर आधारित स्त्री अस्मिता की कहानी है। दांव के चलते आत्महत्या करने का प्रयास करती है, परन्तु जल्दी ही वह आत्मबल से शसक्त होकर अपने पति को छोड़ देती है और पुनर्विवाह के लिए तैयार हो जाती है लक्ष्मीधर मालवीय की कहानी सुबह की सीढियों में द्वितीय विश्वयुद्ध से उत्पन्न मानवीय त्रासदी

सुषम बेदी 1985 से कोलंबिया विश्वविद्यालय, न्यूयार्क में हिंदी साहित्य की प्रोफेसर हैं। इनकी रचनाएं हिंदी की कई विधाओं में हैं इनके उपन्यास में 'हवन', 'लौटना', 'नवाभूम की रस कथा', 'गाथा अमरबेल की', 'कतरा दर कतरा', 'इतर', 'मोरचे', 'मैंने नाता तोड़ा, दो कहानी संग्रह चिड़िया और चील सड़क की लय' तथा एक काव्य संग्रह 'शब्दों की खिड़कियाँ भी प्रकाशित हैं। इनकी रचनाओं में भारतीय और पश्चिमी संस्कृति के बीच प्रवासी भारतीयों के मानसिक आन्दोलन का चित्रण हुआ है। अपने लेखन के बारे में बताती हैं लिखने के मूल में मेरा भारत छोड़कर चले आना ही था। यहाँ के अलग तरह के अनुभव, नए तरह का रहन-सहन, नए तरह के लोग, भाषा संस्कृति, भारत की स्मृतियाँ और नॉस्टेलजिया - सभी मेरे अंतर्मन को आन्दोलित करते रहते थे। मुझे मानवीय रिश्तों, रिश्तों के बीच व्यक्ति की अपनी पहचान, मानव मन की गुथियाँ, उलझनों को समझने की, उनकी पड़ताल में गहरे उतरते

चले जाने में हमेशा रुचि रही है लोगों को उन विसंगतियों को जीते देखा है, उन विडम्बनाओं को देखा है, उन्हीं में से चरित्र उठाये हैं और पहचानी स्थितियों में उतरकर चरित्रों का विकास किया है। जितना नजदीक जाती हूँ उतना ही उसकी विसंगतियाँ देखती हूँ और उन्हीं के जरिए मैं जिन्दगी के यथार्थ पकड़ने की कोशिश करती हूँ।

अंजना संधीर की रचनाओं में अमेरिका हड़्डियों में बस जाता है, 'धूप छाँव और आंगन, बारिशों का मौसम', 'तुम मेरे पाप जैसे नहीं हो' 'सात समुद्र पार से मैं कश्मीर हूँ', प्रवासी हस्ताक्षर और 'प्रवासी आवाज' आदि प्रकाशित हैं। अमेरिका के अन्य रचनाकारों में पुष्पा सकसेना 'अलविदा', 'उसके हिस्से का पुरुष, सूर्यास्त के बाद', 'उसका सच', 'पीले गुलाबों के साथ एक रात', 'वह सांवली लड़की 'क्षितिज की सन्तान रेणु राजवंशी गुप्ता कृत 'प्रवासी स्वर', 'प्रवासी मन', 'कौन कितना निकट, जीवन लीला सुधा ओम धींगरा कृत 'मेरा दावा', 'तलाश पहचान की सुनीता जैन कृत 'बोज्यो 'सफर के साथी आदि मुख्य हैं। सत्येन्द्र श्रीवास्तव कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में 25 वर्ष अध्यापन के बाद अब अवकाश प्राप्त कर चुके हैं। उन्होंने 'जलतरंग', 'एक किरण एक फूल', 'स्थिर यात्राएं' 'मिसेज जोन्स और उनकी गली कुछ कहता है यह समय सतह की गहराई', 'टेम्स में बहती गंगा की धार आदि उनकी उल्लेखनीय कृतियाँ हैं।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि हिंदी साहित्य में मूलतः एक भारतीय संस्कृति, परम्परा, धर्म अपनी अस्मिता को लेकर शुरू हुआ। अर्थोपार्जन हेतु विदेश गए भारतीय के द्वारा गिरमिटिया देशों के साहित्य में इतिहास के शोषण जीवन संघर्ष की मूक अभिव्यक्ति एवं अस्तित्व संकट से जुड़ी संवेदनाएँ हैं। वहीं दूसरी ओर अमेरिका, इंग्लैंड, कनाडा जैसे विकसित देशों के प्रवासी भारतीय हिंदी साहित्य जीवन अनुभवों, वहाँ की संस्कृति नए सरोकार तथा बाजारवाद की गंध से सराबोर है।

सन्दर्भ सूची-

1. अनीता कपूर प्रवासी कथा साहित्य और स्त्री गद्यकोश
2. उशा प्रियंवदा कोई एक दूसरा, कवर पेज

3. अनिल प्रभा कुमार 'घर', पृ0-3

4. वर्तमान साहित्य: वीरेन्द्र मोहन उशादेवी विजय
कोल्हटकर की कहानिया, साहित्य सं० कुंवरपाल सिंह व
नमिता सिंह

5. डॉ० प्रति अरोड़ा प्रवासी साहित्य की कहानियों में
यथार्थ और अलगाव के दबंदव, हिमालिनी, सं० डॉ० श्वेता
दीप्ति